Vipin Dangi

# Love का Limited Edition

Sample Copy. Not For Distribution.

Love का Limited Edition



Sample Copy. Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

**EDUCREATION PUBLISHING**

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

**Website:** *www.educreation.in*

---

**© Copyright, Vipin Dangi**

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

**ISBN:** 978-1-61813-638-1

**Price:** ₹ 314.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India



Sample Copy. Not For Distribution.

# Love का Limited Edition

Vipin Dangi

**EDUCREATION PUBLISHING**
**(Since 2011)**
www.educreation.in



Sample Copy. Not For Distribution.

# परिचय

**"मैं कैद तुम्हारी चाहत में, तुम आजाद हो |**
**मैं दोपहर की धुप सा हुँ, तुम बरसात हो |"**

जैसी कविता लिखने वाले विपिन दाँगी अपनी जिन्दगी के दो दशक पुरे कर चुके है |

“बिना वजह के भी खुश रहना” की फ़िलासॉफ़ी पर जीने वाला ये शख्स म.प्र. के राजगढ (ब्यावरा) जिले के “कुआखेडा” गाँव का रहने वाला है | फ़िलहाल ये इन्दौर में रहते है और अपने अगले नॉवेल पर काम कर रहे है | अपनी मौत तक लिखते रहने की तमन्ना रखने वाले विपिन दाँगी एक जगह कहते है कि-

“जिन्दगी का मजा खिलने, गिरने, बिखरने और फ़िर संभलने में है |”

अपनी कविताओं के माध्यम से वे कई सामाजिक मुद्दो पर भी लिखते है | जैसे-

**"कहीं मन्दिर तोडे जाते है, कहीं मस्जिद पर चढाई करते है |**
**ये हिन्दू है, वो मुस्लिम है, बस आपस में लडाई करते है |"**

ये अपना blog भी लिखते है, जहाँ ये अपनी कवितायँ और अपने संस्मरण लिखते रहते है |

आप इनके blog पढ सकते है :-
www.vipindangi.blogspot.in

आप इनसे contact कर सकते है-
www.facebook.com/vipindangiofficial
www.twitter.com/vipindangi96



Sample Copy. Not For Distribution.

# चलते-चलते....

.....मेरी ये किताब मेरे माता-पिता को समर्पित, जिन्होने मेरी हर गलती को माफ़ किया | जिन्होने मेरे लिये हर तरह का दुख सहा |

मेरी ये किताब मेरे घर "बडाघर" के हर सदस्य और सभी रिश्तेदारों को समर्पित, जिनका प्यार और आशीर्वाद मुझे हमेशा मिला |

ये किताब मेरे 'बडे भाई' को समर्पित, जिसके बारे में मैं कहुँगा कि- "शराबी ही सही मगर वो इंसान अच्छा है | मेरी जिन्दगी का वो किरदार अच्छा है |"

"मेरी ये किताब समर्पित मेरे सभी दोस्तों को |"
"और ये किताब समर्पित मेरे तमाम पाठको को | और उनके पहले प्यार को |"

मैं उम्मीद करता हूँ कि इसे पढकर आप निराश नही होंगे| मैं आपको एक स्वस्थ और मनोरंजक कहानी बता रहा हूँ | और हो सकता है कि ऐसी ही कोई कहानी आपके जीवन में भी हो |

हो सकता है कि मेरी इस किताब की ढेर सारी प्रतियाँ ना बिके, मगर जो भी इसे पढेगा वो एक बेहतरीन और खुबसुरत कहानी का आनंद लेगा | और वो भी इसमे पुरी तरह ढुबकर |



Sample Copy. Not For Distribution.

"और मैं आपके लिये लिखता रहुँगा जीवन पर्यंत |"

जैसा कि आप जानते है ये मेरी पहली किताब है | मैंने इसे बेहतर और त्रुटिरहित बनाने की पुरी कोशिश की है, फ़िर भी यदि आपको इसमे किसी भी प्रकार की त्रुटि दिखे तो मुझे क्षमा करे |

"और अपनी प्रतिक्रिया मुझे जरुर लिखे |"

सादर,

आपका

**विपिन दाँगी**

15-दिसम्बर-2016, इन्दौर |

Vipindangi96@gmail.com

Sample Copy. Not For Distribution.

# कहानी अनुक्रमिका


| क्र. | अनुक्रमांक | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| 1. | कुछ बातें मेरे साथ | 1 |
| 2. | सफ़र की शुरुआत | 10 |
| 3. | प्यार हुआ पहली बार | 21 |
| 4. | थोडी परिवार की बात | 30 |
| 5. | मुलाकात से आगे बढी बात | 39 |
| 6. | मिटे फ़ासलें, जब हम मिलें | 58 |
| 7. | कॉलेज की शुरूआत | 69 |
| | 7.1 थोडी दोस्तों की बात | 69 |
| | 7.2 कॉम्पिटिशन की शुरूआत | 78 |
| | 7.3 डिम्पल से मुलाकात | 83 |
| 8. | बरसात की रात | 129 |
| 9. | आखिरी मुलाकात | 139 |
| 10. | भोपाल में ट्रेनिंग | 146 |
| 11. | एक नई शुरूआत | 171 |
| 12. | अंशिका से मुलाकात | 178 |
| 13. | इन्दौर में आगमन | 215 |
| 14. | रुखसार भाग गई | 225 |
| 15. | मैं रोया पहली बार | 241 |
| 16. | उपसंहार | 253 |




Sample Copy. Not For Distribution.

Sample Copy. Not For Distribution.

# 1

# कुछ बातें मेरे साथ

प्यार इंसान के जीवन का सबसे बेहतरीन, हसीन और यादगार अनुभव होता है | प्यार इंसान की ताकत होता है | प्यार वो है जो प्यार होता है | प्यार जीवन में कितनी बार हो सकता है ? एक बार ? दो बार ? या कई बार ? कोई कहता है कि इंसान को प्यार जीवन में सिर्फ़ एक बार होता है | शायद सही कहता हो, या नही भी | लेकिन चाहे जो भी हो, “प्यार तो प्यार होता है | किसी को एक बार होता है किसी को बार-बार होता है |”

हर व्यक्ति अपने जीवन में अलग-अलग परिस्थितियों से गुजरता है, उस दौरान हो सकता है कि उसको कोई अच्छा लगे और उसे उससे प्यार हो जाये | मगर ये भी हो सकता है कि किसी कारणवश उसका और आपका एक हो पाना सम्भव ना हो और आप दोनो अपने-अपने जीवन में आगे बढ जाते है, आप अपने काम में व्यस्त हो जाते हो | इसी बीच आपको फ़िर से कोई इंसान अच्छा लगने लगता है, उसकी बातें, उसका साथ, आपको पसंद आने लगता है | और आप उस इंसान को चाहने लगते है | इस तरह से आपको फ़िर से प्यार हो जाता है | हालांकि आपके साथ ये भी होता है कि यदि आप किसी के साथ सच्चे प्यार के रिश्ते से जुडे हुये होते है



Sample Copy. Not For Distribution.

तो आपको उस रिश्ते के टुटने के बाद अपने उस साथी को भुला पाना आसान नही होता है मगर आप कब तक अपने पुराने साथी की यादों में गिरफ़्तार रह सकते है ? आपको कभी ना कभी तो आगे बढना पडता है और फ़िर आप जब अपना पिछला सबकुछ भुलाकर आगे बडते है तो आपको फ़िर से प्यार हो जाता है | इस तरह से आपको कई बार प्यार हो सकता है |

जब इंसान किसी के साथ सच्चे प्यार के रिश्ते में होता है तब सारी दुनिया उसे खुबसुरत लगने लगती है | वो शख्स जो प्यार में होता है, सबके बारे में अच्छा सोचता है | उसे हकीकत से ज्यादा खयालों की दुनियाँ भाने लगती है | और उसे हर तरफ़ प्यार ही नजर आता है | हर इंसान को प्यार तो होता ही है कभी ना कभी, किसी ना किसी से, मगर सभी को अपना प्यार कहाँ हासिल होता है | मतलब सभी का प्यार परवान भले ही चढे पर उन्हे मन्जिल नसीब नही होती है | "सिर्फ़ वे ही लोग, जो प्यार में जुनूनी होते है और किसी भी हद तक जा सकते है, और जिस प्यार में दोनो पक्षो की सहमती हो, उन्हे ही अपना प्यार मिलता है | और वे जिन्हे प्यार नही मिलता या जिनको किसी से प्यार तो होता है मगर उन्हे अपने साथी के साथ तमाम जिन्दगी गुजारने का मौका नही मिलता है वे जिन्दगी की मजबुरियों को प्यार से ज्यादा ताकतवर मानते है | मगर इस तरह से वे सिर्फ़ अपने आप को झुठी तसल्ली देते है | क्योंकि इस दुनियाँ में प्यार से ज्यादा ताकतवर कुछ नही होता है | कुछ भी नही | अगर आपका प्यार सच्चा है तो आपके लिये कोई मजबुरी ज्यादा समय तक नही बनी रह सकती है | हर दीवार मुश्किलों की, ढह जाती है और आपका प्यार आपका हो जाता है |"



Sample Copy. Not For Distribution.

"हर आशिक अपनी एक किस्मत लेकर आता है |" कुछ लोग जो प्यार को सतही रुप से लेते है और जो अपने आप को समीक्षक कहते है, वे ऐसा भी कहते है | कोई किस्मत को दोषी ठहराता है, कोई अपने बुरे हालात को | वजह चाहे जो भी हो किसी को उसका प्यार ना मिलने की, मगर एक सच ये भी है कि वे आशिक महान हुये है, प्यार से अलग किसी अन्य काम में, जिनका प्यार गहरा था, जिनका प्यार रुमानी था | और ऐसे लोग बहुत ही कम मिलते है जो इश्क को गम्भीरता लेते है | (आजकल तो प्यार लोगो के लिये जिस्मों का खेल हो गया है |) ऐसे लोग अपना दिल टुटने पर अपने आप को किसी भी काम में ऐसे मसरुफ़ कर लेते है जैसे वही बस जिन्दगी हो उनकी | मगर ऐसा करने के पीछे इनका मकसद होता है इनका अपने साथी को भुलाना | किसी और को चाहना नही लेकिन उसे भूलाना जिसे वो भूलना चाहते है |

अब मैं अपने आपको इन्ट्रोड्युस करता हूँ | मेरा नाम नीलेश है | मैं इन्दौर में रहता हुँ | मैं जो कहानी आपको बताने जा रहा हुँ वो मेरी नही है | तो जाहिर सी बात है कि इस कहानी का मुख्य किरदार भी मैं नही हौऊँगा | ये कहानी है मेरे सबसे अच्छे और सच्चे दोस्त गौरव की | गौरव और मैंने अपनी शुरुआती पढाई से लेकर हमारा बिजनेस, सब साथ में शुरु किया | हम दोनो एक ही शहर से ताल्लुक रखते है | हमने एक ही साल में जन्म लिया और स्कूल से लेकर कालेज तक की पढाई हमने साथ में की | कालेज की पढाई के बाद हमने साझेदारी में अपना बिजनेस शुरु किया था जो फ़िलहाल बहुत अच्छा चल रहा है | ये कहानी जो मैं बताने जा रहा हुं वो बताऊंगा तो मैं ही लेकिन मैं बनकर नही बल्कि गौरव बनकर, क्योंकि इस कहानी में नीलेश की भावनाओं को, उसके



Sample Copy. Not For Distribution.

संघर्ष को, उसकी प्यार के प्रति सोच को, और उसे खुद को बेहतर ढंग से समझाने के लिये उचित यही होगा कि ये कहानी मैं नीलेश बनकर सुनाऊँ |

नीलेश और मैं अब तक एक-दुसरे के हर सफ़र पर हमेशा साथ रहे है | सिर्फ़ तब नही हम साथ रहे, जब वो एक-ढेड साल पहले फ़िल्म राईटर बनने का सपना लेकर मुम्बई गया था | और उसका ये सपना भी पुरा हो चुका था | उसकी लिखी दो कहानियों पर फ़िल्म बन चुकी थी और उसका एक फ़िल्म प्रोडक्शन हाऊस के साथ वर्क कान्ट्रेक्ट भी था | इस वजह से उसको किसी भी तरह की कोई परेशानी नही थी | वो पुरी तरह सेटल था | अच्छी जॉब थी, हमारी कम्पनी भी अच्छी चल रही थी | घर पर भी सब ठीक था | और कोई समस्या भी नही थी |

इस तरह से अभी तक वो अपने हर सफ़र में मन्जिल तक पहुँचा है लेकिन इश्क के सफ़र में पता नही क्यों उसकी किस्मत उसका साथ नही देती है | उसे तीन बार अलग-अलग लडकियों से प्यार हुआ है, और उन्हे भी गौरव से प्यार था मगर आज उसके साथ कोई नही है | हर बार उसका प्यार सच्चा होता था | इस बात को मेरे से बेहतर कोई नही जान सकता क्योंकि मैं उसकी हर स्थिती में उसके साथ रहा | हाँ ये बात अलग है कि लोगो को उसके हर बार सच्चा प्यार होने पर शक हो सकता है | लेकिन सच्चा प्यार क्या है ? सच्चा प्यार वो है जहां आपके मन में उस इंसान के प्रति कुछ भी गलत सोच ना होना, जिससे आप प्यार करते है, भले ही वो गलत हो सकता है | हाँ, बार-बार उसको प्यार होने कि वजह उसकी आगे बढने की सोच को दर्शाता है | वो कभी पीछे मुडकर नही देखता | वो कहता है- “जो बीत गया वो कल था,



Sample Copy. Not For Distribution.

अब जो हो रहा है और जो होगा, वो हमारे हाथ में | तो क्यों ना इसे हम पहले से बेहतर बनाये ?" इसलिये ही शायद उसे बार-बार प्यार हो जाता होगा ?

इंसान के लिये सबसे मुश्किल समय पता है क्या होता है ? किसी भी इंसान के लिये सबसे मुश्किल समय वो होता है जब वो अपने ही तय किये हुये रास्ते पर चलता है और उसे हर वो मन्जिल नसीब होती है जो वो चाहता है | लेकिन जब उसके पास सब कुछ होता है सिवाय किसी भी एक ऐसी चीज के, जिसे वो हासिल करना तो चाहता है लेकिन हासिल नही कर पाता, और जिसे हासिल करना भी आसान होता है, तब उसके लिये वो उसका सबसे बुरा और मुश्किल समय होता है | गौरव के लिये भी यहीं उसके जीवन का सबसे मुश्किल समय था जो अभी चल रहा था | और जब आपके किसी अपने का मुश्किल और बुरा वक्त चल रहा होता है तब आपकी, उसके अपने होने की परीक्षा भी होती है | आपको उसका अपना होने का परिचय उसके हर दुख-सुख में साथ रहकर देना पडता है | आपको उसके उस मुश्किल समय में साथ देकर अपनी सच्ची दोस्ती का परिचय देना पडता है | मैं हमेशा उसके साथ था, हर अच्छे और बुरे वक्त में और आगे भी जीवन भर उसके साथ रहुँगा | खैर सब ठीक हो जायेगा ऐसी सबको उम्मीद है | जो भी उसके जीवन में चल रहा है वो |

हमारी हाऊसकीपिंग मेनेजमेंट की कम्पनी है, जिसके पास कई प्रोजेक्ट साईट्स है | शहर की कई टाऊनशिप्स में हमारी कम्पनी काम करती है और शहर के एक बडे अस्पताल में भी हमारी ही कम्पनी सर्विस प्रोवाईड करती है |



Sample Copy. Not For Distribution.

'गौरव कैसा है ?' एक बहुत ही खुबसुरत सी लडकी, जो हर रोज मुझे मेरे ऑफिस, जो कि हमारी एक साईट (शहर के एक बडे अस्पताल) में था, में आकर मुझसे एक यही सवाल पुछती और आज भी उसने यहीं सवाल पुछा था | मेरा हर बार जवाब रहता 'वो ठीक है' | लेकिन आज मुझे कुछ और जवाब देना था- 'वो ऊपर आईसीयु में है |' मैं ऊपर की ओर इशारा करते हुये कहा |

कौन है ये लडकी जो हर रोज मुझसे गौरव के बारे में पुछती और सिर्फ़ एक ही सवाल 'गौरव कैसा है ?' और अंत में कह देती कि उसे मत बताना कि मैं उसके बारे में पुछती हूं | मैंने उसे कई दफ़ा कहा कि चाहो तो गौरव के नम्बर ले लो और खुद ही बात कर लो, लेकिन नही | ना वो नम्बर लेती उसका और ना ही कोई और बात वो पुछती | आखिर क्या संबंध है उसका गौरव से और कैसे वो मुझे भी जानती है ? और हर रोज वो अस्पताल में आकर उसके बारे में क्यों पुछती ? और सबसे महत्वपुर्ण बात गौरव आईसीयु में एडमिट क्यों है ? क्या हुआ है उसे ? ये सब जानने के लिये तो आपको कहानी पढनी पढेगी |

इस लडकी का नाम अंशिका है | गौरव जब मुम्बई से इन्दौर आया था तब मैंने उसे नही बताया था कि अंशिका रोज उसके बारे में पुछती है | और शायद ये मेरे जीवन की सबसे बडी गलती है | अगर मैं उसे ये बात उसी दिन बता देता जब वो मुम्बई से इन्दौर आया था या फ़िर जब वो इन्दौर से रुखसार को ढुंडने के लिये नरसिँहगढ के लिये निकला था, तो शायद वो वहां जाता ही नही | लेकिन क्या करे, किस्मत बहुत बुरी चीज है साली | बेवफ़ाई करना इसकी फ़ितरत है, ये वफ़ा किसी से नही करती | मगर अब क्या कर सकते है ? जो



Sample Copy. Not For Distribution.

होना नही था वो हो गया और जो होना था वो नही हुआ | हम केवल इंतजार कर सकते है | और वही कर भी रहे है |

गौरव अपनी कहानी तब से शुरु कर रहा है जब वो मुम्बई से वापस इन्दौर आ रहा था | वो मुम्बई में अच्छे से जम गया | मतलब वो मुम्बई राईटर बनने का सपने लेकर गया था और उसकी लिखी दो कहानियों पर फ़िल्म बन चुकी थी | उसके पास अच्छा पैसा था, मुम्बई में उसने घर भी ले लिया था और उसके पास एक फ़िल्म प्रोडक्शन हाऊस के राईटिंग डिपार्टमेंट में अच्छी जॉब भी थी | घर पर भी सब कुछ बेहतर था | कहीं कोई परेशानी नही थी | सब कुछ सही चल रहा था उसके जीवन में | केवल प्यार नही था उसके पास | उसे अपनी पुरी लाईफ़ में तीन बार प्यार हुआ है | अलग-अलग समय पर, अलग-अलग जगह पर, अलग-अलग लडकी से | लेकिन अब तीनो ही उसकी लाईफ़ में नही थी | और ना ही कोई और थी |

“जीवन में कुछ खाली सा लगता है उस वक्त जब आपके पास कुछ नया करने को नही होता है | नीरस सी हो जाती है जिन्दगी जब आप अपने सपनो को पा लेते हो और आपके पास करने को कुछ भी नया नही होता है | कोई ऐसे काम करने के लिये नही होते है जो आपको उत्साहित कर सके |”

हर सफ़र में कहीं ना कहीं ठहराव होता ही है | उसके साथ भी ऐसा ही हो रहा था | उसकी जिन्दगी रुक सी गई है | सब कुछ है उसके पास | पैसा, नाम, इज्जत, सब कुछ | सिवाय किसी के प्यार के | और ना ही उसके पास कुछ ऐसा था करने को जो उसे उत्साहित कर सके तो उसने सोचा की क्युं ना उन लडकियों को ढुंडे जो उसके जीवन का कभी हिस्सा थी और फ़िर से किसी एक के साथ अपने पुराने प्यार की नई



Sample Copy. Not For Distribution.

शुरुआत की जाये | उसका यह विचार बहुत ही अजीब और बेकार सा था | और शायद कोई भी ऐसा नही करता होगा ? लेकिन उसने सोचा था कि किसी अनजान लडकी के साथ प्यार की नई शुरुआत करना मतलब फ़िर से एक बार और प्यार में पडना | और वो अब इन सबसे परेशान हो चुका था | और उसने कहा था कि - एक मौका तो और मिलना ही चाहिये उसे ताकि वो उन्हे पा सके | ये सब बातें उसने मुझे तब कही थी जब वो मुम्बई से इन्दौर आने का प्लान बना रहा था | वो उन लडकियों को ढुँडना चाहता था जिनसे वो कभी प्यार करता था | मैंने उसे कहा था - 'मैं हमेशा तेरे साथ हुँ | आजा ढुंड लेंगे |' मेरे मन में एक सवाल उभरकर आया था कि पहले किसे ढुंडेगे ? मैंने जब गौरव से ये सवाल किया तो उसने कहाँ- 'जो किस्मत में होगी वो मिल जायेगी |'

'वो तो ठीक है लेकिन पहले किसे ढुंडेगे ?' मैंने फ़िर पुछा|

'पहले अंशिका को | वो नही मिली तो डिम्पल, और फ़िर रुखसार |'

'मतलब तीन-दो-एक ?'

'हाँ. तीन-दो-एक |' उसे सबसे पहले रुखसार से प्यार हुआ था | फ़िर डिम्पल और फ़िर अंशिका से |

फ़िर कुछ दिन बाद वो इन्दौर आया | और अब वो उस हालत में है कि वो कुछ बोल भी नही पा रहा है और ना कुछ समझ पा रहा है | उसे होश तक नही है | हर रोज सूरज के उगने के साथ हमारी उम्मीद जगती कि आज उसकी हालत में कुछ तो सुधार होगा | लेकिन दिन ढलते-ढलते हमारी उम्मीद फ़िर से टुट कर बिखर जाती है | पता नही कब उसकी स्थिती ठीक होगी और पता नही कब वो फ़िर से पहले जैसा होगा ?



Sample Copy. Not For Distribution.

कल मुम्बई से उसके ऑफिस से भी फ़ोन आया था | उसके आने के बारे पुछ रहे थे | लेकिन जब मैंने उन्हे उसके बारे में बताया तो वे भी चिंतित हो गये थे | जहां वो काम करता था वहां उसके मेनेजर ने तो उसे मुम्बई लेकर आने को कहा था | उन्होने कहा था कि मुम्बई में बेहतर इलाज हो सकेगा | लेकिन हमने मना कर दिया था | अब आगे मैं कुछ नही कहुंगा | आगे की कहानी अब मैं गौरव बनकर सुनाऊंगा | और कहानी वहाँ से शुरु होगी जब गौरव उन तीनो को ढुंडने के लिये मुम्बई से इन्दौर आ रहा है |

Sample Copy. Not For Distribution.

2

# सफ़र की शुरुआत

मैं अपनी इस यात्रा की शुरुआत मुम्बई से कर रहा हुँ, जहां अभी मैं रहता हुं और काम करता हुं | यह एक ऐसा शहर है जिसमे हर कोई रुक नही पाता है | और बिना किसी काबिलियत के तो बिल्कुल नही | आप पहले से ही किसी के बुलावे पर आते है तो फ़िर अलग बात है | लेकिन यदि कोई कुछ बनने का सपना लेकर, खाली हाथ आता है, तो ठहर नही पाता | बहुत मुश्किलों और संघर्ष के बाद कोई इसमें रहने के काबिल बन पाता है | और जो भी इस शहर को या शहर उसको अपना लेता है वो अपने आप में नसीब वाला होता है | मैं इस शहर में 2009 के आखिर में आया था, फ़िल्मों मे लिखने का सपना लेकर | और मुझे मुम्बई ने स्वीकार किया | ढेड महीने धक्के खाने के बाद मुझे मोका मिल गया और मैं एक टेलेविजन सीरियल मे बतौर असिस्टेंट राईटर काम करने लगा | तीन महीने इस तरह से काम करने के बाद मैं हिन्दी फ़िल्म इंडस्ट्री के एक बडे फ़िल्म प्रोडक्शन हाऊस के फ़िल्म राइटिंग डिपार्टमेन्ट में काम करने लगा | और ये मौका मेरे लिये बहुत ही अच्छा मौका लेकर आया था | यहां काम करते हुये मेरी लिखावट को, मेरी शैली को और मेरे कहानी लिखने के अन्दाज को काफ़ी सराहा गया था और इसका फ़ायदा ये



Sample Copy. Not For Distribution.

**Get Complete Book**
**At Educreation Store**
**www.educreation.in**



Sample Copy. Not For Distribution.

# Love का Limited Edition

'अंशिका, मेरे तुमसे कुछ दिन बात नही करने का ये मतलब तो नही हो सकता है कि मैं बदल गया हूँ ? हो सकता है कि मुझे कुछ काम हो या फिर मैं तुमसे नाराज भी तो हो सकता हूँ ना ?'
'तुम बदल गये हो गौरव ।"
'तुमने मुझे रुलाया है अंशिका । मैं कैसे बदल सकता हूँ ? मैं तुमसे प्यार करता हूँ ।
'इंसान बदल जाता है । उसकी कुछ मजबुरियाँ मोहब्बत से ज्यादा ताकतवर होती है ।'
'मोहब्बत से ज्यादा ताकतवर कुछ नही होता है इस दुनियाँ में ।'

"मैं कैद तुम्हारी चाहत में, तुम आजाद हो । मैं दोपहर की धुप सा हुँ, तुम बरसात हो ।" जैसी कविता लिखने वाले विपिन दाँगी mumbai film writers association के सदस्य है । ये अपना BLOG भी लिखते है । ये अपने blog पर कई तरह की कवितायँ और अपने संस्मरण लिखते रहते है ।
जिन्दगी में एक मुकाम की तलाश में भटक रहे विपिन दाँगी ना जाने कौन सा गम अपने सीने में लेकर जी रहे है कि एक जगह वे लिखते है– "तुम्हारे छोडकर जाने के बाद, देखो कैसा मेरा हाल हुआ है और बेतरतीब बिखरा पडा है घर भी मेरा // एक रोने की बस हसरत है, कमबख्त अब तक अधुरी है । मगर मुझे तडपता देखकर रोने लगा है घर भी मेरा //

आप इनके बारे में और अधिक से इनके blog के माध्यम से जान सकते है–
www.vipindangi.blogspot.in

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
FICTION
ISBN 978-1-61813-638-1
9 781618 136381 >

Sample Copy. Not For Distribution.